जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ६०   अंक - १
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

पौष-माघ : सम्वत् २०७४ वि०   जनवरी – २०१८

आर्य समाज कलकत्ता के १३२ वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर बंग-भाषा में अनूदित यजुर्वेद भाष्य का लोकार्पण करते हुए पं० बं० के महामहिम राज्यपाल श्री केशरी नाथ जी त्रिपाठी और प्रधान श्री सुरेश चन्द जायसवाल, मन्त्री श्री दीपक आर्य एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य श्री सोमदेव जी शास्त्री।

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य समाज कलकत्ता का १३२वाँ वार्षिकोत्सव शनिवार २३ दिसम्बर से रविवार ३१ दिसम्बर २०१७ पर्यन्त स्थानीय ऋषीकेश पार्क (आम्हर्स्ट स्ट्रीट) में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ । आमन्त्रित विद्वत्जन जिन्होंने अपनी उपस्थिति से उत्सव को गरिमा प्रदान की वे थे - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, परोपकारिणी सभा अजमेर के वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेव जी तथा नवोदित भजनोपदेशिका सुश्री प्रियंका भारती जी (भरतपुर,राजस्थान)।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: ७.३० बजे से ९.३० बजे तक आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ । ऋत्विकगण के रूप में वेदपाठ कर रहे थे-पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० नचिकेता भट्टाचार्य, पं० देवनारायण तिवारी, पं० वेद प्रकाश शास्त्री, पं० योगेशराज उपाध्याय, पं० कृष्णदेव जी मिश्र एवं पंडिता अर्चना शास्त्री । प्रतिदिन प्रात: ९.३० बजे से १०.३० बजे तक भजन व उपदेश एवं १०.३० बजे से १२ बजे तक एवं सायं ४ बजे से ६ बजे बंग भाषा में भजन व प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए । इसके अतिरिक्त प्रतिदिन सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक सन्ध्या भजन, व्याख्यान व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, बाल सत्संग, आर्य संस्कृति सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन प्रमुख रूप से आयोजित किये गये ।

आर्य समाज कलकत्ता द्वारा संचालित आर्य कन्या महाविद्यालय एवं रघुमल आर्य विद्यालय के छात्र व छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी उक्त अवसर पर प्रस्तुत किया गया ।

शनिवार २३ दिसम्बर को प्रात: यज्ञ के उपरान्त 'ओ३म्' ध्वजोत्तोलन परोपकारिणी सभा के वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ । ध्वजगीत आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया । विद्यालय की छात्राओं द्वारा बैण्ड ध्वनि एवं मार्च पास्ट किया गया ।

अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक एक विशाल एवं सुसज्जित शोभा-यात्रा आर्य समाज कलकता, १९, विधान सरणी, कोलकाता-६ से निकाली गई जो नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई उत्सव-स्थल ऋषीकेश पार्क में समाप्त हुयी ।

राज्यपाल (प० ब०) द्वारा बंगभाषा में अनूदित यजुर्वेद-भाष्य का लोकार्पण-

सोमवार २५ दिसम्बर २०१७ को सायं ५ बजे आर्य समाज कलकता, १९ विधान सरणी के

(शेष पृष्ठ २६ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ६० अंक – १
पौष-माघ २०७४ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८
जनवरी – २०१८

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. सहृदय प्यार (५९)	वेद-वीथिका से	४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	पं० लेखराम द्वारा संकलित	७
५. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद)	पं० देवनारायण तिवारी	१०
६. वैदिक संस्कृति में ब्रह्मचर्य	मृदुला अग्रवाल	१३
७. संन्यासी तुम ऊंचा कर गये भारत-भू का माथा	प्रो. ओम कुमार आर्य	१७
८. गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव		२२
९. स्वतन्त्रानन्द जी तो स्वतन्त्रानन्द हीं थे ।	स्वामी सदानन्द सरस्वती	२३

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६
दूरभाष : २२४१-३४३९
email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

सहृदय प्यार

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या ।।

अथर्व ३-३०-१

शब्दार्थ :-

सहृदयम्	=	सहृदयता युक्त
सांमनस्यम्	=	सुमनस्कता युक्त, विचार की एकता
अविद्वेषं	=	द्वेष रहितता से युक्त
कृणोमि	=	करता हूं
वः	=	तुम्हारे लिए
अन्यो अन्यम्	=	परस्पर एक दूसरे को
अभिहर्यत	=	प्यार करो, सहानुभूति रखो
वत्सम्	=	बछड़े को
जातम्	=	उत्पन्न, नवजात
इव	=	जैसे
अध्न्या	=	गाय

भावार्थ :-हे मनुष्य ! हमने तुम्हें सहृदय, समान मन वाला और विद्वेष रहित बनाया है । तुम परस्पर एक दूसरे को इस प्रकार प्यार करो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े को प्यार करती है ।

<u>विचार विन्दु :</u>

१. मनुष्य के निर्माण का आदर्श । २. सहृदय आदि की व्याख्या ।
३. सहयोग और संघर्षमूलक सामाजिक सिद्धांत ।
४. गाय के उदाहरण की व्याख्या ।

व्याख्या

प्रस्तुत मंत्र में परमेश्वर ने मनुष्यों को मानव निर्माण का Model आदर्श बताया हैं । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । उसे परिवार में, समाज में, देश में जीना पड़ता है । मनुष्य अपने परिवार और समाज पर निर्भर करता है । मंत्र में कहा गया है कि परमेश्वर ने हमारे निर्माण में तीन उद्देश्य

रखे हैं ।

(१) भगवान ने हमें सहृदय बनाया है । हम करुणा, प्यांर एवं सहानुभूति करके प्रसन्न होते हैं । हमें उससे संतोष मिलता है । करुणा और सहानुभूति का क्षेत्र अपने स्वार्थ से बहुत अधिक विशाल है । हम सेवा, दया अपने परिवार वालों पर, अपने मित्रों पर तो करते ही हैं किन्तु यदि हमारा कोई अपरिचित हो और दुःख में पड़ा हो तो हमें उसके प्रति दया, सहानुभूति, करुणा से अधिक संतोष-सुख मिलता है । इस प्रकार सहृदयता, सहानुभूति का क्षेत्र, प्रसन्नता के क्षेत्र से बड़ा हैं । किसी अपरिचित के घर विवाह की शहनाई बज रही हो या पुत्र का जन्मोत्सव हो तो हममें कोई विशेष प्रसन्नता की बात नहीं होती । किन्तु यदि कोई लाख दूर का अपरिचित हो या किसी बूढ़ी अबला बुढ़िया का जवान बेटा मर गया हो तो ऐसे दूर अपरिचित संबंधों में भी हमारे हृदय में दया, करुणा, सहानुभूति उमड़ती हैं क्योंकि प्रभु ने हमें सहृदय बनाया हैं। परमेश्वर ने हमें सहानुभूति युक्त बनाया है । साथ ही भगवान् ने हमें सुमन-सुन्दर, फूल जैसा प्यारा मन दिया है ।

(२) परमेश्वर ने हमें साम्मनस्वी सुमन वाला बनाया हैं । हमारे मन में दूसरों के लिए सुमन जैसी सुगन्ध हो, सुमन जैसी कोमल-भावना हो । हम सुमन, फूल को प्यार करते हैं । क्यों, इसलिए कि उसमें सुगन्ध हैं । हमारे जीवन की सुगन्ध क्या हैं ? हमारे अच्छे प्रशस्त शुभ आचरण और परोपकारी कार्य। हमारी प्रवृत्ति संघर्ष की नहीं मेलजोल एवं सामंजस्य की है, हमारी प्रवृत्ति सहानुभूति की है.। हमारी प्रकृति में स्वार्थ नहीं परोपकार हैं ।

संसार में कुछ समाज-संचालन के सिद्धान्त संघर्ष प्रधान हैं। उदाहरण के लिए डार्विन का विकासवाद कहता ह बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है इसी तरह यह प्रकृति का नियम है कि बलवान निर्बल को दबा देता है और साम्यवादी द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी हैं, वे वर्ग-संघर्ष का सिद्धान्त बताते हैं । यदि मजदूर और मालिक में संघर्ष होता रहे, यदि धनी निर्धन लड़ते रहें, तो समाज में देश में कभी सुख-शान्ति नहीं हो सकेगी । वेद की शिक्षा इन दोनों कलह-प्रिय या कलह-प्रेरक सामाजिक सिद्धान्तों से पृथक हट कर मानव समाज का आर्दश सहृदयता, सुमनस्कता और अविद्वेष को बताती है । वेद कहता हैं —

(१) मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुतस्वसा ।

(२) अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संम्मनाः ।

भाई-भाई से द्वेष न करें, न बहने बहनों से द्वेष करें, पुत्र सदा पिता के अनुकूल रहें और सदा माता के मन को प्रसन्न रखें । भारतवर्ष का इतिहास इस सहृदयता, सुमनस्कता और प्यार से भरा हुआ हैं । श्रीराम को वनवास हो गया । भरत ने राज्य अस्वीकार कर दिया । अयोध्या का साम्राज्य भरत और राम के बीच में ठोंकरे खा रहा है । उसे कोई स्वीकार नहीं करना चाहता । यह ऐतिहासिक सत्य वेदों की शिक्षा से ही सम्भव है ।

प्रस्तुत मंत्र में परमेश्वर ने गनुष्य को बताया है कि हमने तुम्हें सहृदय, सुमन और द्वेषरहित बनाया

हैं । यही तुम्हारे निर्माण का आदर्श है । हमारे विधाता का हमारे लिए यही आदर्श हैं । जूते पैर के लिए बनते हैं और टोपी सिर के लिए बनती है । यदि टोपी की जगह जूते और जूतों की जगह टोपी पहनी जाये तो क्या बनेगा ? इसी तरह मनुष्य सहृदयता, सहानुभूति, सुमनस्कता और अविद्वेष को यदि छोड़ देगा तो स्थान भ्रष्ट हो जायेगा । प्रभु के आदर्श से गिर जायेगा । मनुष्य को अपने आदर्श, अपने स्थान से भ्रष्ट नहीं होना चाहिए ।

'स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते दन्ता केशा नखा नरा:'

अर्थात् दांत, केश, नख और मनुष्य की शोभा अपने अपने स्थान पर बने रहने में ही है । अपने स्थान, अपने आदर्श से भ्रष्ट होने पर इसकी शोभा नष्ट हो जाती है ।

भगवान् ने हमें प्यार का, सहृदयता का एक बहुत सुन्दर उदाहरण दिया हैं-जैसे गाय अपने सद्य: उत्पन्न बच्चे को प्यार करती हैं वैसे हम एक-दूसरे को प्यार करें । गाय जब बच्चा पैदा करती हैं तो उसके जेर को चाट-चाट कर बच्चे को स्वस्थ खड़ा कर देती हैं, वह प्रसव भी करती हैं और दाइयों की तरह बच्चे को स्वच्छ और साफ भी करती है । कहते हैं गाय बड़ी निर्बल, प्राणी है । किन्तु गाय के बच्चे पर यदि सिंह भी आक्रमण कर दें तो गाय अपने बच्चे की रक्षा के लिए सिंह से भी लड़ जाती है और जब तक गाय जीवित रहती है सिंह बच्चे को छू भी नहीं पाता है ।

परमेश्वर का हमारे लिए यही आदेश है कि हम मनुष्य मात्र को प्यार करें । भारतवर्ष के हों, अमेरिका या इंग्लैण्ड के हों, अफ्रीका या आस्ट्रेलिया के हों, सभी मनुष्य हैं और सब को आपस में सहृदयता, सहानुभूति से रहना चाहिए । संकीर्ण जातीय साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय-कलह परमेश्वर के निर्माण का आदर्श नहीं है, परमेश्वर ने हिन्दू, मुसलमान या ईसाई नहीं बनाया है। न अमेरिकन और अफ्रीकन ही बनाया हैं । सभी मनुष्य हैं और सबको भाई-भाई की तरह प्यार से रहना ही हमारे लिए परमेश्वर की शिक्षा है ।

शोकप्रस्ताव

आर्य समाज कलकत्ता के लाइब्रेरियन श्री विरेश कुमार आर्य जी के पिता श्री मोहन साव जी का निधन दिनांक २० नवम्बर २०१७ दिन सोमवार को प्रात: २ बजे ८६ वर्ष की आयु में उनके निवास स्थान बिहार-शरीफ, जिला-नालान्दा में हो गया । आर्य समाज कलकता के ३.१२.१७ को रविवारीय सप्ताहिक सत्संग में एकत्रित समस्त आर्यजन स्व० मोहन साव जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं तथा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवगंत आत्मा को सदगत प्रदान करें ।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय– १

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में सम्वत् १८८१ में हुआ था । पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है । इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

अध्याय २

गंगा नदी के तट पर सात वर्ष का जीवन

(फाल्गुन शुदी १, सं० १९२३ से स० १९३० तदनुसार १२ मार्च, १८६७ से सन् १८७३ ई० तक)

(क) हरिद्वार से रामनगर तक

(फागुन शुदी ,१९२३ आश्विन सं० १९२६ तक)

हरिद्वार ,ऋृषीकेश, कनखल , लंढौरा ,शुक्रताल ,मीरापुर ,परीक्षितगढ़, गढमुक्तेश्वर, चाशनी (चासी), रामघाट, सोरों, बदरिया , पटियाली , कम्पिल ,कायमगंज, फर्रुखाबाद, अनूपशहर ,ताहीरपुर , कर्णवास , अहार , छलेसर , अतरौली बेलोन, नरोली (नरदौली), गढिया, अलीगढ़, कासगंज, अम्बागढ़, शाहबाजपुर, ककोड़ा, कायमगंज, श्रृंगीरामपुर,जलालाबाद, कन्नौज ,भटुर (बिठूर) मदारपुर, कानपुर, शिवराजपुर , प्रयाग, रामनगर ।

कुम्भ के अवसर पर स्वामी जी: विभिन्न प्रत्यक्षदर्शियों के वक्तव्य

हरिद्वार मे पाखण्ड-खण्डन का सूत्रपात - स्वामी जी विद्या मे पूर्ण होकर मतमतान्तरों पर विचार करते हुए कुम्भ की संक्रान्ति से एक मास पूर्व लगभग १२ मार्च, सन् १८६७ को हरिद्वार पधारे । एक विश्वेश्वारानन्द और दूसरे शंकरानन्द स्वामी और ईश्वरीप्रसाद गौड़ ब्राह्मण, दिल्ली निवासी तथा पाँच छ; अन्य ब्राह्मण साथ थे । सप्तस्त्रोत पर बाड़ा बाँध कर और उसमें आठ-दस छप्पर डलवा कर वहाँ डेरा किया और वहाँ

एक पताका गाड़ दी जिसका नाम 'पाखंड खण्डिनी' रखा ।

हर की पैड़ियों पर स्नान के माहात्म्य का निषेध- पंडित माधवराम गौड़, मूल निवासी जयपुर वर्तमान निवासी फतहगढ़ ने वर्णन किया कि हम रामघाट से चौबीस के कुम्भ पर हरिद्वार को, मेले से एक मास पूर्व गये थे । स्वामी जी उस समय तक वहाँ पहुँच चुके थे और उपनिषदों की कथा किया करते थे। एक दिन हमने हरिद्वार की पौड़ियों पर जाने का निश्चय किया तो कहने लगे कि मत जाओ,यहीं स्नान करो, वहाँ ज़ाकर क्या करोगे ? कोई माहात्म्य नहीं है। हरिद्वार में प्राय: विद्वान लोग उनके पास आते और घडी आध घड़ी के संभाषण के पश्चात् चले जाते थे, उस मेले में एक दिन ब्रह्मचार्य जो संभवत: पंजाब की ओर के थे स्वामी जी से दो घंटे तक संस्कृत में धर्मचर्चा करते रहे । स्वामी जी ने हरिद्वार में 'भडुवा भागवत खंडन' की सहस्त्रों प्रतियाँ बाँटी थीं और मुझे भी दस बारह बांटने के लिए दी थीं जिसमें से दो मेरे पास विद्यमान हैं और उनमें से एक आपको देता हूँ। (देखो परिशिष्ट सं० १) और ऐसा ही सतनामसिंह निर्मले साधु ने वर्णन किया ।

आत्माराम शुक्ल, पुत्र रामसहाय, रिवाड़ी निवासी, ने वर्णन किया कि मुझे भी स्वामी जी ने सैकड़ों पर्चे भागवतखंडन के सारे मेले में बाँटने के लिए दिये थे जिनको मैं कई दिन तक बांटता रहा और २७२ प्रतियाँ जो बाँटने से मेरे पास रह गई थीं वे अबतक विद्यमान हैं।

उपहारों का गरीबों में वितरण-पंडित दयाराम सनाढ्य आगरा निवासी ने ,जो हरिद्वार में स्वामी जी के सत्संग में सम्मिलित होते रहे बताया कि वहां साधारण तथा विशेष विद्वानों से धर्मचर्चा होती रही । जो गृहस्थी लोग स्वामी जी के दर्शनार्थ जाते वे भिन्न-भन्न वस्तुएँ भेंट चढ़ाते थे और सायंकाल तक बहुत कुछ एकत्रित हो जाया करता था । प्रतिदिन सायंकाल को सब एकत्रित पदार्थ स्वामी जी निर्धन लोगों को बांट दिया करते थे, अपने लिए कुछ न रखते थे ।

वर्णव्यवस्था की मिथ्या धारणा का निषेध– पंडित बलदेवप्रसाद शुक्ल, फर्रुखाबाद निवासी, कहते हैं कि जब वह पाखंडखंडिनी झंडी गाड़ कर वेदविरुद्ध मतों का खंडन करने लगे तो उस समय उनके पास बहुत सी पुस्तकें थीं और कई संन्यासी साथ थे । इस कुम्भ पर स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और समस्त प्रख्यात पंडित तथा साधु आये हुए थे । बड़े-बड़े राजा, महाराजा और विशेष कर जम्मू तथा काश्मीर नरेश महाराजा

---

१ .इस अवधि में स्वामी जी निम्नलिखित विविध स्थानों पर धर्मचर्चा, उपदेश, सन्ध्योपासना, शिक्षा, शास्त्रार्थ आदि करते रहे तथा मनुस्मृति भी पढ़ाते रहे । पं० लेखरामजी ने इस अवधिके वृतान्त विविध सज्जनों के मुखाग्र से सुनकर उन्हीं की भाषा में अंकित किये हैं। इस समय स्वामी जी कुछ स्थानों पर एक से अधिक बार भी गये थे। -सम्पादक

रणवीर सिंह भी पधारे थे । बनारस के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती यजुर्वेद के मन्त्र ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ऊरु तदस्य यद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रो अजायत।। (यजुर्वेद०अ० ३१मं ११)का यह अर्थ करते थे कि ब्राहाण परमेश्वर के मुख से और क्षत्रिय उसके बाहु से और वैश्य जंघाओं से और शूद्र पांव से उत्पन्न हुए हैं । स्वामी जी ने इस अर्थ का खंडन किया और कहा कि यदि इसका यही अर्थ है तो फिर मुख से खँगार भी तो उत्पन्न होता है । इसलिए मुख से उत्पन्न नहीं प्रत्युत ब्राह्मण वर्णो में मुख्य है और क्षत्रिय वैश्य और शूद्र क्रमशः बाहु, जंघा और पांव के सदृश हैं। इस पर लोगो ने कहना आरम्भ किया कि यह नस्तिक है - वेदों का खडन करता हैं । स्वामी जी ने भरसक लोगों को समझाने का यत्न किया । जो बुद्धिमान् लोग थे वे तो समझ गये । शेष तो झगड़े को ही अच्छा समझते थे- वे कैसे समझते ! इतने में गुसाइयों और विशुद्धानन्द का परस्पर झगड़ा हो गया । गुसाइयों ने विशुद्धानन्द पर नालिश की और वह स्वामी जी से सहायता के लिए आये । स्वामी जी ने उत्तर दिया कि हम न तुम्हारे और न विशुद्धानन्द के, प्रत्युय सत्य के पक्षपाती हैं । जो वेद में लिखा है उसके अनुयायी हैं । उस समय वहाँ कैलाशपर्वत भी उपस्थित थे । विशुद्धानन्द ने महाराजा साहब जम्मू व कश्मीर से कहा और महाराजा साहब के प्रयत्न से साहब कलक्टर बहादुर ने वह नालिश खारिज कर दी ।

अवधूत अवस्था में रहते थे- सन्त अमीरसिंह जी निर्मला ने जो संस्कृत के अच्छे पंडित हैं वर्णन किया कि जब हम स्वामी जी को हरिद्वार में मिले उस समय वह नग्न अवधूतावस्था में थे । हमने उनसे 'चितुसुखी' ग्रन्थ की एक पंक्ति अनुमान के विषय में पूछी क्योंकि उसके विषय में हमें सन्देह था । स्वामी जी ने उसका स्पष्ट अर्थ करके कहा कि यह आर्ष ग्रन्थ नहीं है और हम इसको प्रमाण नहीं मानते परन्तु आपकी प्रसन्नता के लिए हम इसका शुद्ध अर्थ करते हैं ।

उन्हें केवल वेद ही मान्य थे — स्वामी महानन्द सरस्वती, जो उस समय दादूपंथ में थे- इस कुम्भ पर स्वामी जी से मिले । उनकी संस्कृत की अच्छी योग्यता है । वह कहते हैं कि स्वामी जी ने उस समय रुद्राक्ष की माला, जिसमें एक-एक बिल्लौर या स्फटिक का दाना पड़ा हुआ था, पहनी हुई थी; परन्तु धार्मिक रूप में नहीं। हमने वेदों के दर्शन, वहां स्वामी जी के पास किये; उससे पहले वेद नहीं देखे थे। हम बहुत प्रसन्न हुए कि आप वेद का अर्थ जानते हैं । उस समय स्वामी जी वेदों के अतिरिक्त किसी को (स्वतःप्रमाण)न मानते थे । क्रमशः ....

---

१. लगभग एक सौ कापियाँ मुझे दीं । — संकलन-कर्ता ।

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'

मो0 : 9830420496

(८)

श्री पं० देवनारायण तिवारी – आर्य समाज के उपदेशक और विद्वान् कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें ४ महाकाव्य हैं । पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छन्दबद्ध भावानुवाद किया है । आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

यह अष्टम कड़ी आपके समक्ष है । – सम्पादक

प्रथम समुल्लास (गत दिसम्बर अङ्क से आगे)

सर्वत्र सत्ता है तुम्हारी, नित्य ही प्रभु साथ हो ।
प्रत्येक पल जीवन चलाते ग्रहण कर मम हाथ हो ।।
वेदस्थ आज्ञा मान तव, मैं आचरण तद्वत् करूँ ।
प्रभु सत्य बोलूँ, सत्य मानूं सत्य कार्य किया करूँ ।। ७०।।

रक्षा हमारी कीजिए मैं आप्त सत्य पुरुष बनूँ ।
मम बुद्धि स्थिर हो सदा, श्रुति कर्मधारी पथ चुनूँ ।।
धर्मज्ञ बनकर मैं रहूँ, उससे विरुद्ध नहीं चलूँ ।
हो छत्र छाया आपकी, उसमें सदा फूलूँ फलूँ ।। ७१।।

त्रय ताप मेरा नष्ट कर शुभ शान्ति हमको दीजिए ।
अज्ञानता अरु राग-द्वेष विमुक्त जीवन कीजिए ।।
कल्याण कारक कार्यो को हम सदा करते रहें ।
करुणा करो हे नाथ ! तव भक्ती- सुधा पीते रहें ।। ७२ ।।

अन्तर प्रकाशित हो हमारा धर्म-पथ हम चलें ।।
हो प्राप्त परमानन्द प्रभु ! श्रति मार्ग छोड़ नहीं टलें ।।
तेरी कृपा की कोर मुझ पर सर्वदा हे नाथ हो
माता-पिता प्रभु सब तुम्हीं हो, नित्य मेरे साथ हो ।। ७३।।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।। यजुर्वेद ७१४२

छन्द- चेतन और गतिशील के हे नाथ ! तुम ही प्राण हो ।
औ जड़ जगत के भी प्रभो, रक्षक सदैव महान् हो ।।
अर्थात सबके आत्मा हे ईश बस तुम एक हो ।
स्वप्रकाशरूप सदा तुम्हीं, तुमसे विमल मति नेक हो ।। ७३।।

इस हेतु तुमको "**सूर्य**" कहकर वेद करते गान हैं
प्यारा तुम्हारा नाम भी, सुन्दर तुम्हारे काम हैं ।।७४।।

(अत सातत्यगमने) इस धातु से आत्मा शब्द सिद्ध होता हैं। योऽतीति व्याप्नोति, स आत्मा । जो सब जीवादि जगत में निरन्तर व्यापक हो रहा है ।

परश्चासावात्मा च य आत्मभ्यो जीवेभ्य: सूक्ष्मेभ्य: परोति सूक्ष्म: स परमात्मा ।

छन्द - जो सब जगत्-जीवादि में व्यापक निरन्तर हो रहा ।
उत्कृष्ट भी जीवादि से जो ब्रह्म है सबसे महा ।।
जो जीव औ आकाश एवं प्रकृति से भी सूक्ष्म है ।
साकार कोई माप या प्रकटित न कोई लक्ष्म है ।
है जानता सब कुछ सदा वह हृदय व्यापी ईश है ।।
इस हेतु उसका नाम है "**परमात्मा**" जो ईश है ।। ७५।।

य: ईश्वश्रेषु समर्थेषु (परम:) श्रेष्ठ: स परमेंश्वर:।।
जो सब समर्थों से अधिक सामर्थ्यवन-महान है ।
वह ईश्वरों का ईश प्रभु अत्यन्त महिमावान है ।
जिसके बराबर और कोई है न इस संसार में ।
इस हेतु "**परमेश्वर**" उसे कहते सभी संसार में ।। ७६ ।।

(षुञ् अभिषवे षूङ्० प्राणिगर्भ विमोचने) इन धातुओं से सविता शब्द सिद्ध होता है । "अभिषव प्राणि गर्भविमोचनं चोत्पादनम् यश्चराचरं जगत् सुनोति सूते वोत्पादयति स सविता परमेश्वर" ।

छन्द - उत्पत्तिकर्ता सब जगत् का जो महत्तम ईश है ।
इस हेतु ''सविता'' नाम उसका जो परम जगदीश है ।
सारे चराचर विश्व का निर्माण करता क्षेम से ।
'गर्भस्थ' रह करता सृजन , उत्पन्न करता नियम से ।।७७।।

(अतएव प्यारे ब्रह्म की महिमा सभी जन मानते ।
जप मन्त्र गायत्री महा निर्मल सुमति सब मांगते ।।७८।।

(दिवु, क्रीडा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद
मद, स्वप्न, कान्ति, गतिषु) इस धातु से **''देव'**
शब्द सिद्ध होता है ।

छन्द - क्रीडा कराने के लिए संसार का निर्माण कर-
आनन्द नूतन नित्य ही सरसा रहा मुदमय सुघर ।।
धार्मिक जनों की विजय का साधन जुटाता नित्य ही
शुभ चेष्टा उत्पन्न कर गति मान देता है सही ।। ७९।।

अपने उपासक वृन्द को आभा-प्रभा देता सुभग
सबका प्रकाशक वह प्रभो स्वप्रकाश देता नित सुभग ।।
स्तुत्य है, उसकी प्रशंसा नित्य ही बुधजन करें
मद दूर कर निज आत्मा से, मोदमय नित मन करें ।। ८० ।।

मदमत्त जन का भङ्ग कर मद, ताड़ना देता महा ।
शयनार्थ करता रात्रि वह, फिर प्रलय भी करता महा ।।
जो स्वयं ज्ञान स्वरुप देता विविधतम बहु वस्तु है ।
इस हेतु उसको **''देव''** कहते, वहन माया-ग्रस्त है ।। ८१ ।।

''यो दीव्यति क्रीडति स देवः ।।

निज में स्वयं से ही करे क्रीड़ा बिना सहयोग के ।
अर्थात सब में मोद भरता है स्वयं के योग से ।।
आन्नद बरसाता मधुर जो सहज मधुर स्वभाव से ।
अनुरागमय रचता जगत् उत्कृष्ट अपने भाव से ।। ८२ ।।

क्रमशः ....

वैदिक संस्कृति में ब्रह्मचर्य

-मृदुला अग्रवाल

वैदिक संस्कृति की एक अपूर्व देन है, ''ब्रह्मचर्य''।

विश्व की किसी भी संस्कृति ने ब्रह्मचर्य को इतना महत्व नहीं दिया जितना कि भारतीय संस्कृति ने दिया । ''ब्रह्म'' अर्थात्''परमेश्वर'', ''चर्य'' अर्थात् रमण करना या विचरण करना । परमेश्वर में विचरण करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है । अर्थात परमेश्वर का चिन्तन, मनन और ध्यान करना ही ब्रह्म में विचरण करना कहलाता है । ब्रह्मचर्य रूपी 'तप' से मन एवं भौतिक इन्द्रियों को संयम में रक्खा जा सकता है । 'तप' अर्थात् अपने कर्त्तव्य कर्म में सावधानी बर्तना । ब्रह्मचर्य यौन- सम्बन्धी अर्थात् उपस्थ एवं जननेन्द्रिय का संयम है जो कि मनुष्य का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यत्मिक विकास करता है । 'ब्रह्म' अर्थात् 'परमेश्वर' ही ब्रह्मचारी को बल का सामर्थ्य, ब्रह्मज्ञानी का प्रताप एवं दीर्घायु प्रदान करता है तथा स्वस्थ, बद्धिमान और यशस्वी भी बनाता है । पतंजलि मुनि ने 'योगदर्शन' पाद २, सूत्र ३८ में कहा है :-''ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभ:'', अर्थात् ब्रह्मचर्य (वेदों के विचार और जितेन्द्रियता) के अभ्यास में 'वीर्य' (वीरता अर्थात् धैर्य, शरीर, इन्द्रिय और मन के सामर्थ्य) का लाभ होता है ।

वेदों में 'ओ३म्' पद का सबसे बड़ा सुख व सहारा है। सारे वेद इसी पद को परमात्म-प्राप्ति का साधन बतलाते है । ''ब्रह्मचर्य-पालन'' इसकी प्राप्ति का सबसे अच्छा साधन है, जिससे अक्षय आनन्द की प्राप्ति होती है । ''ब्रह्म'' का दूसरा नाम ''ज्ञान'' है । ''ऋते ज्ञानान्न मुक्ति:'', ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं। ज्ञान से परिष्कृत बुद्धि ही मनुष्य को संसार की अनित्यता एवं आत्मा की नित्यता का बोध कराती है । बुद्धि को विमल बनाने के लिए वेद- विद्या का ज्ञान आवश्यक है । ब्रह्मचारी को वेदों का अध्ययन और उसके अनुसार आचरण अवश्य करना चाहिए । ''हे मनुष्यों ! आत्मा, मन और शरीर से ब्रह्मचर्य के साथ विद्याओं में नियत होके विद्या और सुशिक्षा का संचय करो । द्वितीय विद्याजन्म को पाकर पूजित होवो , जिस-जिस के साथ अपना जितना सम्बन्ध है उसको जानो ।''- यजुर्वेद, अध्याय २८,मन्त्र -१५ ।।आत्मा निराकार एवं मन भौतिक साकार होने के कारण बुद्धि की सहायता के बिना परमात्मा की ओर प्रवृत्त होना कठिन है । परमात्मा आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी से भिन्न अनादि, अनन्त, सबसे महान् होने के कारण अत्यन्त सूक्ष्म एवं एकरस है । 'ब्रह्म' का एक नाम 'महान्' अर्थात् 'बृहत्' भी है। जब मनुष्य को शरीर से आत्मा के भिन्न होने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है तब स्वाभाविक जीव सच्चिदानन्द होकर शोक - मोह के बन्धन, जनम - मरण के बन्धन से छूट जाता है । अथर्ववेद, काण्ड -११, सूक्त-५, मन्त्र-१९, के अनुसार- जो पूर्ण आयु पाकर शरीर से आत्मा अलग

होती है तो उसे ही मृत्यु को पराजित कर मृत्यु को मारना कहते हैं, जो कि ब्रह्मचर्य के तप से ही सम्भव है — मृत्यु पर विजय पाना । 'इन्द्र' जीवात्मा है,'देंव' इन्द्रियाँ हैं । इन्द्र अर्थात् जीवात्मा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही इन्द्रियों (देवों) को सुखी बना सकता है । जीवात्मा ज्ञान के सुख से ब्रह्मनन्द की प्राप्ति करता है अर्थात् परमेश्वर को प्राप्त होता है । ब्रह्मचर्य के द्वारा ही इन्द्रियों की अकाल मृत्यु नहीं होती, पूर्ण आयु तक शक्तियाँ बनी रहती हैं । आत्मा में अनुचित विषयों के भाव तक भी न उठने देना जीवात्मा का ब्रह्मचर्य ही है । भोगी संसार के भोंगों में रमा हुआ भी दु:खी है, परन्तु योगी संसार के भोगों (विषयों) पर विजय पाकर संसार के इतने परिवर्तनों में भी सुखी है । ब्रह्मचारी (योगी) ब्रह्मचर्य के तपोबल से परमात्मा के गुणों को प्रकट करके, विद्वानों को प्रसन्न करके, वेद -विद्या के प्रचार से आचार्य का इष्ट सिद्ध करता है । जो वीर्य-निग्राहक एवं वेदपाठक पुरुष है वह प्राण -अपान (श्वास-प्रश्वास विद्या) को, व्यान (सर्व शरीर-व्यापक वायु विद्या) को, वाणी (भाषण-विद्या) को ,मन (मनन-विद्या) को, ह्रदय (के ज्ञान) को, ब्रह्मण (परमेश्वर-ज्ञान) को, और धारणावती बुद्धि को जानकर सम्पूर्ण उत्तम गुणों से सम्पन्न होकर विद्याओं का प्रकाश करता है और बुद्धि का चमत्कार दिखाता है ।''मनुष्य परमेश्वर को पिता के समाज हितकारी जानकर अपने सब व्यवहारों को स्वस्थ रक्खे और ब्रह्मचर्य आदि तप तथा सत्य व्यवहार से ईश्वर ज्ञान में तत्पर रहे । ''- अथर्ववेद , काण्ड १२,सूक्त-३,मन्त्र-१२ ॥ जो मनुष्य ब्रह्मचर्य से आप्त विद्वानों के समीप से विद्या, शिक्षा को प्राप्त हुआ ईश्वर के समान उपकार -दृष्टि से प्रशंसा और सत्कार को प्राप्त हुआ प्रतिदिन उत्तम बुद्धि से समस्त शुभ गुण, कर्म और स्वभावों को धारण करता है वह सम्पूर्ण विद्यावान् होता है। -ऋग्वेद, मंडल -२, सूक्त- १,

मन्त्र-३ ॥

स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है कि ब्रह्मचर्य में केवल ब्रह्मयज्ञ और अग्निहोत्र को ही करना होता है । जब तक पूरी विद्या ग्रहण करे तब तक ब्रह्मचर्य को रखना आवश्यक है । विवाह करके भी लम्पटता न करे तो शरीर में प्राण बलवान् होकर सब शुभगुणों का वास रखता है । मनुष्य रोगरहित रहता है । आयु भी दीर्घायु होती है । अखण्ड ब्रह्मचारी अपने तप से सबसे उत्तम चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ा सकता है । सब प्रकार के रोगों से रहित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होता है । यह बड़ा कठिन काम है जो कि काम के वेग को थाम कर इन्द्रियों को अपने वश में रखना । स्वामी दयानन्द से किसी ने पूछा कि ''आपको वासना नहीं सताती क्या ? उन्होंने उत्तर दिया कि '' मैं स्वयं को किसी न किसी काम में व्यस्त रखता हूँ शायद इसलिए मुझे विषय -वासना नही सताती । '' जो मनुष्य ज्ञान के चिन्तन में, वेदों के अध्ययन में, परमेश्वर -प्राप्ति की चेष्टा में संलग्न रहता है वह विषयचारी कैसे हो सकता है। ''स्त्री-पुरुष युवा होकर अविवाहित ही रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करे तो गृहस्थाश्रम में प्रवेश बहुत सुन्दर

होता है । ब्रह्मचर्य की महिमा इतनी है कि बैल ब्रह्मचर्य के बिना शकर को नहीं खींच सकता , घोड़ा बिना ब्रह्मचर्य के शत्रु पर विजय नहीं पा सकता । जब पशुओं में ब्रह्मचर्य की इतनी महिमा है तो मनुष्य को तो अपने जीवन में लाना ही चाहिये । -अथर्ववेद, काण्ड -११ , सूक्त-५ , मन्त्र-१८।।

ब्रह्मचर्य-धर्म से शरीर की पुष्टि, मन की संतुष्टि और विद्या की वृद्धि प्राप्त कर, विवाहित स्त्री-पुरुष यत्न के साथ उत्तम संतान धारण करें।- यजुर्वेद, अध्याय -८ ,मन्त्र-२८।। जो माता-पिता अपने पुत्रों और कन्याओं को ब्रह्मचर्य के साथ वेद -विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त कर शरीर और आत्मा को बल वाले करें तो उन संतानों के लिए अत्यन्त हितकारी हो । मनुस्मृति, अध्याय -२, श्लोक -१४० में आचार्य के लक्षण इस प्रकार लिखें है:- जो द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) शिष्य का उपनयन करके कल्प (यज्ञ आदि संस्कार विधि) और रहस्य (उपनिषद् आदि ब्रह्मविद्या) के साथ वेद पढ़ावे, उसको ''आचार्य'' कहते हैं । उपनयन संस्कार में आचार्य ब्रह्मचारी शिष्य को सदाचारी, ज्ञानी एवं बुद्धिमान बनाता है जो कि शिक्षा के तीन मुख्य अंग हैं। शिष्य अपने आचार्य की देख-रेख में रहता है । भौतिक सुखों को त्यागकर वह ज्ञान पाने की इच्छा से गुरु के पास जाता है । आचार्य व गुरु उसे ब्रह्म के समीप ले जाता है और उसके जीवन को सफल बनाता है। उसे सरलता, पवित्रता और धैर्य सिखाता है । आचार्य जब अपने शिष्य ब्रह्मचारी की इच्छा करे तब उस आचार्य को स्वयं भी ब्रह्मचारी होना चाहिए। उस समय वह गृहस्थ-वृत्ति का न हो , उसे अपने परिवार की फिक्र न हो, अपने विद्यार्थी के निरीक्षण में अपना सारा समय दे सके । गृहस्थाश्रम व्यतीत कर वाणप्रस्थ या संन्यास आश्रम में प्रवेश कर चुका हो ऐसा आचार्य तो और भी अच्छा होता है । जैसी शिक्षा हो वैसा ही उसका जीवन अर्थात् जीवन का क्रियात्मक पहलू भी ब्रह्मचारी शिष्य के सामने प्रस्तुत कर सकता है । माता जिस प्रकार अपने उदरस्थ गर्भ की रक्षा करती है, उसी प्रकार आचार्य भी इस शिष्य पुत्र की रक्षा करे । आचार्य उस ब्रह्मचारी को तीन रात तक अपने उदर में रखता है । ब्रह्मचारी जब तक ब्रह्मचर्य आश्रम में है , तब तक मानो वह रात्रिकाल में है, क्योंकि अभी तक उसके हृदय में विद्यासूर्य का पूर्ण प्रकाश नहीं हुआ । तीन रात आचार्य के उदर में शयन करता है अर्थात् आचार्य की पूर्ण सुरक्षा में रहता है । आचार्य उसके उत्तम गुणों की परीक्षा लेता है । जब आचार्य की शरण से बाहर संसार में आता है अर्थात् पैदा होता है, तब ऐसे 'आदित्य -ब्रह्मचारी' (सूर्यसम प्रकाशमान तथा तेजस्वी) को विद्वान् एवं गुणीजन मान -सम्मान देते हैं और इस तेजस्वी) को विद्वान् एवं गुणीजन मान -सम्मान देते हैं और इस नवोत्पन्न के दर्शन के लिये टोली बाँधकर आते हैं- ''तं जातं द्रष्टुममिसंयन्ति देवा :''-अथर्ववेद, काण्ड -११ ,सूक्त-५ ,मन्त्र-३।।

ब्रह्मचारी को उसके नये जीवन में सुख-सामग्री दिलाना आचार्य का काम होता है । ब्रह्मचारी

हवन में तीन समिधायें छोड़कर, मेखला से कटिबद्ध होकर ,परिश्रम से, इन्द्रियदमनरूपी तप से, समुद्र के समान गम्भीर ब्रह्मचर्य के साथ, पृथिवी,सूर्य एवं अन्तरिक्ष विद्या को जानकर, विद्यारूप जल में स्नान करके आचार्य की संतुष्टि से स्नातक होकर और समावर्तन करके संसार का उपकार करते हुए ऋृषियों के समान सारे शुभकार्य करते हुए कीर्तिमान व यशस्वी होता है । ब्रह्मचारी में सम्पूर्ण दिव्य गुण विद्यमान रहते हैं। वह अपना सम्पूर्ण ज्ञान एवं उत्तम शिक्षा को सबमें (विद्वानों में) दान कर ऐश्वर्यवान तथा प्रतिष्ठित होता है । संसार में जितना भी ज्ञान है उसका आदि स्त्रोत ''ब्रह्म'' व'' परमेश्वर'' ही है। परमेश्वर के नियम से सब प्राणी शरीर धारण करके ब्रह्मचर्य के पालन से उन्नति करते हैं । इसी प्रकार ''समलैंगिक व्यक्ति'' भी ब्रह्मचर्य तप से स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं। ''समलैंगिकता'' एक प्रकार का यौन-सम्बन्धी रोग है जिसे ब्रह्मचर्य से शीत -उष्ण आदि के द्वन्द्व को सहन करके , आलस्य को त्यागकर , ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर , तप से ,योगाभ्यास से, सन्मार्ग - दर्शन से, सूर्य - समान प्रकाश करके , सबके हितकारी होकर, श्रवण -मनन एवं निदिध्यासन से प्रतिबिन्धत किया जा सकता है । (श्री खुशहाल चन्द्र जी आर्य ने अपने ग्रन्थ ''खुशहाल- लेखावली'' में इस प्रसंग को विस्तार में लिखा है) आज फिर विरजानन्द जैसे गुरु व आचार्य तथा महर्षि दयानन्द जैसे पूर्ण ब्रह्मचारी शिष्य की आवश्यकता है । आचार्य के ज्ञानरूपी प्रकाश से राष्ट्र चमक उठता है । ब्रह्मचारी शिष्य में भी सद्गुणों का विकास होता है ।

टंकारा बोधोत्सव १२ , १३ , १४ फरवरी २०१८

हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार,मंगलवार, बुधवार १२,१३,१४ फरवरी २०१८ को किया जाएगा । आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें । आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी ।

निवेदक :- राम नाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली- ११०००१

संन्यासी तुम ऊंचा कर गये भारत-भू का माथा

-प्रो. ओम कुमार आर्य, अंतरराष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता

हमारा अतीत भव्य था, जीन्ह, गौरवशाली था। वर्तमान में कुछ भटकाव और शिथिलता आ गई है, जिसको हम अपने महापुरुषों के प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं कृतित्व से नवीन ऊर्जा, स्फूर्ति एवं प्रेरणा प्राप्त करके दूर कर सकते हैं तथा अपने भविष्य को अपने अतीत की भांति समुज्जवल, भव्य एवं गौरवशाली बना सकते हैं। इस प्रकार की प्रेरणा देने वाले हमारे युग पुरुषों की सूची बहुत लम्बी है जिनमें एक चमकता दमकता नाम स्वामी श्रद्धानन्द का है, उनका नाम महज नाम नहीं बल्कि दिव्य आभा युक्त दैदीप्यमान हस्ताक्षर है जिसकी चमक सदियों-सदियों तक फीकी नहीं पड़ेगी। आगामी २३ दिसम्बर २०१७ उनका ९१ वाँ बलिदान दिवस है। आइये उस अमर बलिदानी के महाकाव्य सरीखे विशाल एवं विराट व्यक्तित्व, कृतित्व एवं जीवन की एक संक्षिप्त सी झलक देखने का प्रयास करें। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा कल्याण-मार्ग का पथिक सन् १८२४ में लिखी थी जिसमें वे लिखते हैं कि उनका जन्म संवत् १९१३ फाल्गुन मास तदनुसार सन् १८५६ ई० में तत्कालीन संयुक्त पंजाब के जालन्धर नगर के समीप तलवन गांव में हुआ। पिता नानकचंद्र कई प्रचार की नौकरियों से त्यागपत्र देते-देते अंतत: पुलिस इन्स्पेक्टर नियुक्त हो गये। पितामह श्री गुलाबचंद पुलिस अधीक्षक बन कर सेवानिवृत्त हुये थे। अच्छा खाता-पीता राजसी ठाट-बाट का खानदान था और चूंकि स्वामी जी अपने छ: भाई बहनों में सबसे छोटे थे इस करके उन्हें माता, पिता तथा अन्य परिवार जनों का भरपूर लाड़, प्यार, स्नेह, दुलार मिला था। इनका बचपन का नाम मुंशीराम था और कुल पुरोहित ने उनका एक नाम बृहस्पति भी रखा था जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ज्ञान का स्वामी और यह नाम ईश्वर के असंख्य गौणिक नामों में एक है। इस नाम के सर्वथा अनुरूप हो वे कल्याण-मार्ग के साथ-साथ सदा ज्ञान-मार्ग के पथिक भी बने रहे। वे विश्व विख्यात शिक्षा शास्त्री थे। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र और कन्या गुरुकुल देहरादून उनकी ज्ञान - साधना के मुँह बोलते उदाहरण है , ऊंचे नभ में लहराती उनकी कीर्ति पताकायें है। यद्यपि वर्तमान में इन संस्थाओं का वह प्रारंभ वाला श्रद्धानन्दीय स्वरूप यथा पूर्व अथवा यथावत् नहीं रहा है तथापि ये स्वामी जी की पावन स्मृति की अमिट निशानियाँ तो हैं ही एक और ऐसा ही शब्द देखिये जो उन्होंने धर्मवीर पं० लेखराम आर्य मुसाफिर की स्वरचित जीवनी की प्रस्तावना में (सन् १९१४) अपने नाम के साथ लिखा था , मुंशीराम जिज्ञासु। अब तो नाम के साथ जिज्ञासु लगाने का एक चलन सा हो गया है किन्तु मुंशीराम यथार्थत: ही जिज्ञासु थे, सत्यन्वेषी थे, बात की तह तक पहुंचना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। सत्य की तलाश में, तत्व -ज्ञान प्राप्ति की चाह में वे दर-दर भटके

कभी रामायण कभी महाभारत का अध्ययन किया , विंध्यवासिनीं देवी के दर्शन किये, काशी विश्वनाथ के दर्शनार्थ नित्य नियम से जाते रहे, ईसाइयों के यहाँ चर्च में गये अन्य सन्त महन्तों के चक्कर काटे किंतु उनकी समस्त शंकाओं और संशयों का निंवारण तो तब हुआ जब वे सन् १८७९ के अगस्त मास में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये । बिगड़ैल, स्वेच्छाचारी, दुर्व्यसनग्रस्त और पथ से भटके युवक मुंशीराम को वह सत्य मिल गया जिसकी तलाश में वह इतस्तत: भटकता फिर रहा था । स्वामी जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि विरोधियों ने दुष्प्रचार करके महर्षि को नास्तिक जादूगर के रूप में प्रचारित कर रखा था ताकि लोग उनसे (महर्षि से) दूर रहें और इन ढोंगियों के चंगुल में फंसे रहकर अपनी गांठ कटवाते रहें ताकि इन मिथ्याचारियों के शौक चोंचले इन अंध भक्तों की कीमत पर पूरे होते रहे । पर इसी नास्तिक जादूगर ने मुंशीराम के जीवन का कांटा बदल दिया पतनोन्मुख मुंशीराम को महात्मा मुंशीराम बनने के मार्ग पर प्रवतिर्त कर दिया जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द बनकर विश्व के आकाश और विश्व - इतिहास पर छा गया । इसीलिये तो बहुत ही कृतज्ञतापूर्वक अत्यंत भावुक होकर स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा के प्रारम्भ में इन शब्दों में महर्षि को याद किया है- ऋषिवर, तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो गये हैं (क्योंकि यह आत्मकथा सन् १९२४ में लिखी गई थी) परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदय पटल पर ज्योंकी त्यों अंकित है । मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने ही मुझे कैसे गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया ....मैं अब क्या हूँ यह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है...........मैं तुम्हारा ऋणी हूँ ....परम पिता से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे ....यह इतना हृदय की गहराइयों से निकला हुआ भावना प्रधान आत्म -निवेदन है कि लगता है स्याही से नहीं आंसुओं से लिखा हुआ है ।

स्वामी जी का जीवन विस्तृत भू-भाग पर फैले एक अथाह महासागर की तरह है, उसमें से कुछ एक बिन्दु ही इस लघु लेख के सीमित से कलेवर में प्रस्तुत किये जा सकते है । वे किसी एक वर्ग अथवा क्षेत्र तक सीमित महापुरुष नहीं थे । उन्होंने तो क्या धर्म क्या अध्यात्म क्या साहित्य, क्या शिक्षाक्षेत्र, क्या राजनीति क्या स्वाधीनता संग्राम, इन सबमें जीवन भर पूरा योगदान दिया और अंत में इन्ही संकल्पों के लिये उन्होंने जीवन की आहुति भी दे दी । इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपने अपूर्व उज्जवल क्रिया कलापों से मातृभूमि का मान , सम्मान एवं गौरव बढ़ाया शीर्षक में जो मैंने लिखा है-'संन्यासी तुम ऊँचा कर गये भारत-भू का माथा इस कथन को भी प्रमाणों व उदाहरणों से पुष्ट करना है । युवक मुंशीराम का विवाह बारह वर्षाया बालिका शिवदेवी से हुआ था । मुंशीराम ने दुल्हिन और विवाह के विषय में जो इन्द्रधनुषी सपने संजोये थे वे सब चूर-चूर हो गये । मुंशीराम व्यसनों की दलदल में धंसते चले गये । मद्यपान, जुआ, सट्टा, बदनाम गलियों में आवारागर्दी, भटके युवकों का कुसंग, ये सब

मुंशीराम के जीवन में था । परिवार की बस इतनी भर चर्चा करके कि उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी अत्यंत अल्पायु में सन् १८९१ में स्वर्ग सिधार गईं, चार अबोध सन्तानें पीछे छोड़कर वेदकुमारी ८ वर्ष, हेमकुमारी ६वर्ष, हरिश्चंद्र ४ वर्ष और सबसे छोटे, साथ ही रोगी भी, इन्द्र २ वर्ष ।

प्रसंगवश बता दूं कि सन् २०१७ स्वामी श्रद्धानंद की संन्यास-दीक्षा का शताब्दी वर्ष है, उन्होंने अप्रैल १२, १९१७ को संन्यास लिया था । तथा-कथित महान् नेताओं की जयन्ती शताब्दी, पुण्य तिथि शताब्दी और न जाने क्या-क्या मनाया जाता है । यह दु:ख और चिंता का विषय है कि देश, धर्म, जाति के रक्षक, आर्यों के गौरव अदम्य शौर्य के धनी स्वाधीनता सेनानी स्वामी श्रद्धानंद की संन्यास-दीक्षा का १०० वाँ वर्ष लगभग समाप्ति के कगार पर है और आर्य जनों को व्यर्थ की तिकड़मबाजी से फुर्सत ही नही है कि उस वीर संन्यासी की महानता के अनुरूप एकजुट होकर उसकी संन्यास दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष्य में कोई भव्य आयोजन हरिद्वार अथवा कुरुक्षेत्र अथवा दिल्ली अथवा किसी अन्य नगर में समारोहपूर्वक करें । ऐसा न करना कृतघ्नता की पराकाष्ठा ही कहलायेगी ।

यूँ तो युवक मुंशीराम, महात्मा मुन्शीराम और तदुपरान्त स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन ही घटना, बहुल और घटना-संकुल रहा है किन्तु जीवन का अन्तिम दशक, संन्यास-दीक्षा और राजनीति में प्रवेश के पश्चात् का सारा कालखण्ड, दिसम्बर २३, १९२६ बलिदान - पर्यन्त, अत्यन्त उल्लेखनीय, क्रांतिकारी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण घटनाओं, निर्णयों आंदोलनों से परिपूर्ण कालखण्ड है । उन सब घटनाओं का वैदिक धर्म, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता की दृष्टि से अनन्य साधारण महत्व है । प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था । पहले तो अंग्रेजों ने सहयोग के बदले हम भारतीयों को बड़े सब्ज बाग दिखाये थे, स्वतन्त्रता के सपने परोसे थे । किंतु किया विश्वासघात और हमें दिया रोलट एक्ट, दमनचक्र, शोषण उत्पीड़न । स्वामी जी राजनीति में प्रविष्ट हो चुके थे । हिन्दू मुसलमान, दोनों उनको अपना नेता मानते थे । वे जब बोलते थे- हम देशवासी, तो ह का मतलब हिन्दु और म का मतलब मुसलमान होता था । २९ मार्च १९१९ को विरोध-प्रदर्शन विषयक सभा हुई जिसमें स्वामी जी के साथ हकीम अजमल खाँ मि० खैब कुरैशी, मि० अब्बास हुसैन कारी ,मौलाना अहमद सईद, लाला शंकर लाल, प्रसिद्ध पौराणिक नेता पं० लक्ष्मीनारायण आदि सभा में मौजूद थे। तय हुआ कि ३० मार्च १९१९ को चांदनी चौक स्थल पर विरोध-प्रदर्शन किया जायेगा । सारा बाजार बंद था, जुलूस शांतिपूर्वक चल रहा था, इतने में ब्रिटिश सरकार ने (भूल से चली गोली) के बहाने जुलूस में भगदड़ मचाने की साज़िश रची । स्वामी जी सरकार के गलत इरादे को भांप गये, सधे हुए कदमों से आगे बढ़े और ललकार कर कहा कि यदि सरकार की पुलिस और सेना की बन्दूक में कोई गोली है तो वह मेरी छाती पर चलाई जाये, खबरदार प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने का दु:साहस मत करना । तनी हुइ संगीनें झुक गई, लोग आगे बढ़े और श्रद्धानन्द-भवन (बाद का बलिदान- भवन

नया बाजार) तक जाकर प्रदर्शन विसर्जित हुआ । चांदनी चौक गवाह है कि उस शूरवीर संन्यासी ने अहंकारी गोरी सरकार का दम्भ चूर-चूर कर दिया । किसी कवि ने चित्रण किया - निहत्थी जनता, गर्वान्ध सिपाही, सब चिंतित थे कि कैसे निभेगी भय का भाव सभी के मन में कि गोली चलेगी, गोली चलेगी । सोचा भी न था कि ऐसे समय संन्यासी की छाती ढाल बनेगी प्रबल हुंकार सुनकर स्वामी की ब्रिटिश की संगीन झुकेगी।संगीन झुकी, जयकारे गून्जे, कण-कण से आवाज यह आई धन्य स्वामी, धन्य स्वामी तूने देश की लाज बचाई । तत्पश्चात् वह घटना हुई जो न भूतो न भविष्यति की कोटि में आती है। ४ अप्रैल १९१९ को जामा मस्जिद के प्रांगण में सभा हुई जिसमें मुस्लिम भाइयों ने एक-मत से तत्कालीन महानायक, हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक स्वामी श्रद्धानंद को तकरीर के लिये आमंत्रित किया और स्वामी जी ने ऋग्वेद के प्रसिद्ध मंत्र ओ३म त्वं हि न: पिता वसो...........का उच्चारण करके अपना व्याख्यान दिया । ऐतिहासिक जामा मस्जिद ने ऐसा सम्मान किसी गैर- मुस्लिम नेता को न पहले कभी दिया था न बाद में कभी दिया । महात्मा गाँधी सर्वधर्म समरसता और तुष्टीकरण का राग अलापते-अलापते संसार से विदा हो गये, यह सम्मान तो उन्हें भी नही दिया गया । ६ अप्रैल १९१९ को फतेहपुरी मस्जिद में भी स्वामी जी का व्याख्यान हुआ । यह विडम्बना नहीं तो और क्या है कि मात्र ७-८ वर्ष पूर्व जो व्यक्ति देश की एकता अखण्डता और गौरव का प्रतीक था, हिन्दू-मुसलमानों के मध्य एकता का सेतु था उसी को एक मतांध, जुनूनी मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने गोलियों से शहीद कर दिया । हम सबको अतीत से सबक लेकर आपसी घृणा, द्वेष, विरोध,वैमनस्य को मिटाने का प्रयास करना चाहिये । स्वामी जी अविचल संकल्प, दृढ़ इच्छाशक्ति अदम्य साहस के धनी दूरदर्शी युगपुरुष थे उन्होंने जो कुछ भी किया राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के लिये किया वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिये किया, सदियों से दासता का दंश सहते आ रहे पददलित हिन्दू समाज के लिये किया । वे जानते थे कि जब तक हिन्दू जाति शक्ति संपन्न नहीं होगी तब तक अन्य मत पन्थ वाले लोग उसका सम्मान नहीं करेंगे उससे मैत्री तो कदापि नहीं करेंगे । कुछ घटनायें देखिये - अपनी धर्मपत्नी शिवदेवी को अपने (स्वामी जी) लिये भूखा देख,कष्ट सहते देख, उस आर्य गृहिणी की तपस्या देख उन्होने मद्यपान, माँसाहार, अन्य दुर्व्यसनों को एक झटके में तिलान्जलि दे दी । बड़ी सुपुत्री वेदकुमारी के मुख से- ईसा-२ बोल तेरा क्या लगे है मोल - सुनकर अगले ही दिन सोहनलाल आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना कर दी जो आज एक सुप्रतिष्ठित स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षण-संस्था है (जालंधर में) शिक्षा के स्वदेशीकरण के विचार से और मैकॉले प्रदत्त शिक्षा प्रणाली के प्रत्युत्तर में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके सुप्त राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, युवापीढ़ी में आत्मविश्वास पैदा किया जिससे स्वाधीनता का पथ प्रशस्त हुआ । जब लगा कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है और इसका प्रचार प्रसार करना हमारा दायित्व है तो उस समय सभा का पत्र सद्धर्य प्रचारक जो उर्दू में निकलता था उसे रातोंरात बदल कर हिन्दी में प्रकाशित करवाना प्रारंभ कर दिया । स्वामी जी कुछ काल के लिये काँग्रेस में रहे बाद में

कॉँग्रेस की ढुलमुल और तुष्टीकरण की नीति के चलते इससे पृथक हो गये । सन् १९१९ में बैसाखी के दिन अमृतसर में जालियाँवाला बाग का रक्तरंजित काण्ड हुआ तो कॉँग्रेस पार्टी दिसम्बर मास (१९१९) में जो वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में होना था उसे रद्द करने, आगे सरकाने या और कहीं करने का विचार करने लगी । तब स्वामी श्रद्धानन्द जी आगे आये और अधिवेशन अमृतसर में ही करने का परामर्श दिया, स्वागताध्यक्ष का दायित्व लिया तथा एक अत्यंत सफल अधिवेशन अमृतसर में ही करके दिखाया । उक्त अधिवेशन की सारी कार्यवाही हिन्दी में हुई राजनैतिक प्रस्तावों के साथ-साथ सामाजिक महत्व के प्रस्ताव भी पारित हुये और यह सब संभव हुआ उस महान् विभूति आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द की नीति कुशलता, विलक्षण योग्यता संगठन सम्हालने की अपूर्व क्षमता, अविचल संकल्प राष्ट्र प्रेम के बल पर । मोपलाकाण्ड की त्रासदी से आहत होकर उन्होने हिन्दू नेताओं को साथ लेकर फरवरी १३, १९२३ को आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की इस सभा का प्रधान भी सभी ने एकमत, एकस्वर से स्वामी जी को ही बनाया । इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी जी मृत्युपर्यन्त शिक्षा, राजनीति, धर्म, शुद्धि आदि के माध्यम से राष्ट्र निमार्ण के कार्य में लगे रहे, राष्ट्र को गगनचुम्बी ऊंचाइयों तक उठाने में लगे रहे । शुद्धि को लेकर कुछ मुसलमान भाई उनके कट्टर विरोधी बन गये, उनको मारने के षडयंत्र रचने लगे । अतंत: अब्दुल रशीद नामक एक मतान्ध युवक ने कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द को बलिदान मार्ग का पथिक बनाकर अमर हुतात्माओं की श्रेणी में शामिल कर दिया । २३ दिसम्बर १९२६ को अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द हमें रोता बिलखता छोड़कर, सीने पर गोलियाँ खाकर परलोकगमन कर गये । आइये हम उनके बताये पथ पर चलने का संकल्प करें, महर्षि मिशन को आगे बढ़ाने का व्रत लें और स्वामी जी को सश्रद्ध श्रद्धांजलि दें-

संन्यासी तुम ऊँचा कर गये भारत - भू का माथा
युगों-युगों तक गायेगा इतिहास तुम्हारी गाथा ।
संकट की घड़ियों में ये आकाश के चांद सितारे ,
तेरा आह्वान किया करेंगे अपनी भुजा पसारे ॥
जब तक बहेगी हिमगिरि से गंगा की निर्मल धारा,
तब तक अमर रहेगा स्वामी प्रेरक नाम तुम्हारा ॥
तेरे पदचिनह अमिट रहेंगे क्रूर काल को छाती पर,
अवनि-अम्बर गर्व करेंगे तेरी याद की पावन थाती पर ॥
कृतज्ञ राष्ट्र याद करेगा आंखों में आँसू भरकर ।

संपर्क सूत्र- जवाहर नगर पटियाला चौक, जीन्द (हरियाणा)-126102
फोन:- 01681-226147, 9416294347

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गतवर्षों का भाँति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल, टीकरी, जानी, मेरठ में मकर सौर संक्रान्ति के पावन अवसर पर **१३ व १४ जनवरी २०१८, तदनुसार माघ कृष्ण द्वादशी एवं त्रयोदशी वि० सं २०७४ शनिवार व रविवार** को वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है ।

जहाँ **१३ जनवरी २०१८** को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् **स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार)** की **४९वा** पुण्यतिथि के अवसर पर **अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी** का आयोजन किया जा रहा है । जिसका विषय है - **''उपनिषदों में विविध विद्याएँ ।''** इसमें देश के विभिन्न स्थानों से आये हुए सुप्रसिद्ध विद्वज्जन - आत्मा का स्वरूप, विविध देवताओं (अग्नि, इन्द्र, आदि) का स्वरूप, सृष्टयुत्पति विद्या- विविध लोक, शरीर, जीव-जन्तु आदि, प्रकृति माया का स्वरूप, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, ब्रह्म की विविध रूप में उपासना जैसे उपशीर्षकों पर अपना शोध लेख प्रस्तुत करेंगे, जो अन्तर्राष्ट्रीय मानक त्रैमासिकी शोध पत्रिका 'पावमानी' (ISSN- 2223-6329) में प्रकाशित किये जाएँगे ।

१० जनवरी २०१८ को प्रारम्भ किये गये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति, नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार १४ जनवरी को होगा । जिसमें समागत विद्वानों के प्रवचन एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन, ब्रह्मचारियों के आकर्षक एवं रोचक बौद्धिक एवं शारीरिक बल प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम होंगे ।

अत: आप सभी वेदानुरागी सज्जन इष्टमित्रों सहित सपरिवार गुरुकुल प्रभात आश्रम में सादर आमन्त्रित हैं । अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठायें एवं पुण्य के भागी बनें ।

निवेदक:-

कुलाधिपति
स्वामी विवेकानन्द
(गुरुकुल प्रभात आश्रम)
(८९२३५९१८७२)

प्रधान
विवेक शेखर

मंत्री
डॉ. वाचस्पति

ओउम्

स्वतन्त्रानन्द जी तो स्वतन्त्रानन्द हीं थे ।

- स्वामी सदानन्द सरस्वती
दयानन्दमठ दीनानगर
जि०- गुरदासपुर (पंजाब)

जन्म एवं जन्म स्थान :-

लुधियाना जिला ने राष्ट्र को अनेक विभूतियां दी हैं । स्वाधीनता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय, शास्त्रार्थसमर के विजयी योद्धा, आर्य गौरव स्वामी दर्शनानन्द जी, स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक इसी जिले की देन हैं । प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिले के ही देन है । महर्षि दयानन्द १८७६ ई० में पंजाब आए । उनके आगमन से वीर—भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ । इस नवजागरण की बेला में लुधियाना जिले के मोही ग्राम के सरदार भगवान सिंह के घर में पौष मास विक्रम संवत १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहर सिंह का जन्म हुआ । माता-पिता ने आपका नाम केहर सिंह रखा। केहर का अर्थ है :— सिंह, तो केहर सिंह का अर्थ है— सिंहों का सिंह । केहर सिंह ने अपने नाम को सार्थक करके दिखाया । यथा नाम तथा गुण की उक्ति आप पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है ।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पूर्वज हल्दी घाटी (राजस्थान) से आकर यहां मोही ग्राम में बसे थे । स्वामी जी के रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था । सरदार भगवान जी की पत्नी की मृत्यु के बाद केहर सिंह जी का लालन - पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्य समाज की छाप :-

केहर सिंह जी लताला के उदासी साधुओं के डेरे में पं० बिशनदास जी से वैद्यक पढ़ते थे । पं० बिशनदास जी संस्कृतज्ञ एवं सुयोग्य चिकित्सक थे । पं० जी वैदिक धर्मी विचारों के थे । उनके प्रभाव में आकर केहर सिंह पर भी आर्य समाज की छाप पड़ी ।

गृहत्याग और ब्रह्मचर्य व्रत :-

स० भगवान सिंह की इच्छा थी कि केहर सिंह सेना में जनरल कर्नल बने, परन्तु उन्होंनें वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बनना उचित समझा । ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए उन्होंनें धर्मशास्त्रों का अध्ययन, अध्यापन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्षो तक कौपीनधारी रहे ।

संन्यास और विदेश यात्राएं :-

आर्य समाज के नेताओं और विद्वानों में स्वामी जी ने सर्वप्रथम संन्यास दीक्षा ली । इनको संन्यास की दीक्षा फिरोजपुर जिलें के परवरनड़ नामक ग्राम में श्री स्वामी पूर्णानन्द जी ने विक्रम संवत् १९५७ में दी । स्वामी पूर्णानन्द जी ने आपको प्राणपुरी नाम दिया । संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में बिना किसी सभा—संस्था की आर्थिक सहायता के धर्म-प्रचार करते रहे । स्वदेशागमन पर पं०बिशनदास जी की आज्ञा से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए पहले रामा मण्डी फिर लुधियाना को केन्द्र बनाया । १९१४ ई० में मॉरीशस में वेद प्रचार के लिए गए । वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगो को संगठन सूत्र में बांधा । भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए राष्ट्र भाषा का प्रचार किया । मॉरीशस के लोगों का नैतिक उत्थान और चरित्र निर्माण किया ।

स्वतन्त्रता संग्राम :-

१९१६ ई० में स्वदेश वापसी पर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े । मार्शल ला (१९१९ ई०) के दिनों में मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा से कांग्रेस को सहयोग दिया । १९२० ई० में बर्मा गए । माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का प्रचार किया । अंग्रेज सरकार को आप कांटे की तरह चुभनें लगे । १९३० ई० में लाहौर में कांग्रेस की सभा से भाषण देने के कारण आपको काल कोठरी में बन्द कर दिया ।

दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना :-

१९३८ ई० में इनके द्वारा दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की गई । इसे पहले मानव केन्द्र बनाया गया । धर्म प्रचार, संस्कृत प्रसार का यह केन्द्र बन गया । सहस्त्रों रोगी हर मास यहां औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं ।

क्रान्तिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर इसी आश्रम में शरण लेते रहे । महात्मा गांधी जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द के सुशिष्य यति को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी । उस समय स्वामी जी के उत्तराधिकारी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज मठ के अध्यक्ष थे ।

स्वराज्य आन्दोलन :-

आपने मालेरकोटला, लोहारु व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर लोगों के अधिकारों की रक्षा की । महात्मा गांधी जी भी आपकी कार्यक्षमता से प्रभावित हुए । आपके सफल व

कुशल नेतृत्व से आर्य समाज की विजय हुई । स्वराज्य आन्दोलनों की गति तीव्र हुई ।

आर्य समाज के प्रचार के लिए आप पूर्वी अफ्रीका और मॉरीशस गए । आप ने वहां पर रहे भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनितिक अवस्था का अध्ययन करके भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया । अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार के लिए अनेक कार्य किए । आपं कई भाषाओं के विद्वान, लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान थे । आप आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान रहे ।

निर्वाण :-

भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे । ३ अप्रैल १९५५ ई० को बम्बई में आपको निर्वाण की प्राप्ति हुई ।

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है । आगामी बोधोत्सव १२,१३,१४ फरवरी २०१८ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा ।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित, अप्रकाशित लेख एवं कविता १० जनवरी २०१८ तक भिजवाकर कृतार्थ करें । लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों । ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा । आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल पर ''वॉकमेन चाणक्य''टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं । इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा ।

अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार,

ए-४१९ डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली- ११००२४

चलभाष नं०९८१००३५६५८

(पृष्ठ २ का शेषांष)

सभागार में पं० बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी के कर-कमलों द्वारा बंग-भाषा में अनूदित यजुर्वेद-भाष्य का लोकार्पण किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य सोमदेव जी (अजमेर) ने की । विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे समाजसेवी श्री बृजमोहन गाड़ोरियाजी । यजुर्वेद-भाष्य का बंगला-भाषा में अनुवाद किया है पं० सतीश चन्द्र मंडल जी ने । इस अवसर पर मन्त्री श्री दीपक आर्य जी ने पुष्पगुच्छ द्वारा महामहिम राज्यपाल जी का स्वागत किया । आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया । इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए महामहिम राज्यपाल जी ने कहा कि विश्व शान्ति वेद की शिक्षाओं द्वारा ही हो सकती है महर्षि अरविन्द घोष एवं प्रो० मैक्समूलर जी ने भी महर्षि दयानन्द जी के कार्यों की प्रशंसा की है ।

महामहिम राज्यपाल (मेघालय) श्री गंगा प्रसाद जी का अभिनन्दन – दिनांक ३० दिसम्बर २०१७ को सायं ७ बजे आर्य समाज कलकता के वार्षिकोत्सव के अवसर पर समारोह स्थल ऋषीकेश पार्क में मेघालय राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया । आर्य समाज कलकता के प्रधान एवं मन्त्री जी ने पुष्प गुच्छ एवं शाल ओढ़ाकर एवं आर्य समाज एक सहयोगी संस्थाओं के अधिकारी तथा बंगाल प्रान्त व अन्य प्रान्तों से समागत विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने महामहिम राज्यपाल जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया । इस अवसर पर आर्यसमाज कलकत्ता के आदरणीय विद्वान श्री पं० देवनारायण तिवारी द्वारा रचित हिन्दी काव्य **'श्री कृष्ण चरित मानस'** का विमोचन महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी द्वारा किया गया ।

दिनांक ३१ दिसम्बर २०१७ को उत्सव के अन्तिम दिवस पर नव दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुयी । तत्पश्चात् कोलकाता को समस्त समाजों का सामूहिक सत्संग एवं ऋषि लंगर का आयोजन हुआ । गुरुकुल ललुआ गेड़िया की ब्रह्मचारिणियों द्वारा व्यायाम व शौर्य प्रदर्शन किया गया । सायंकाल ६.३० बजे से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित एक वृत चित्र **'आह्वान'** का प्रदर्शन किया गया । अन्त में मन्त्री श्री दीपक आर्य जी ने अपने समस्त सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया ।

मन्त्री-दीपक आय

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का त्रैवार्षिक अधिवेशन-

दिनांक ३० दिसम्बर २०१७ रविवार को आर्य समाज कलकता १९ विधान सरणी के ऐतिहासिक सभागार में प्रातः ११ बजे से श्रीराम आर्य प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के अध्यक्षता में ईश्वर प्रार्थना के साथ प्रारंभ हुआ । जिसमें विगत वर्षो में प्रचार की गतिविधियों

का विवरण प्रस्तुत किया गया तथा विगत तीन वर्षो में दिवंगत आर्यों के आत्मा की शांति के लिए २ मिनट का मौन रखा गया।

बंगाल प्रान्त के सुदूरवर्ती ग्रामों में आर्य समाज के प्रचार की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए प्रचार की योजनाओं का क्रियान्वित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया आगामी ३ वर्षो के लिए प्रतिनिधि सभा बंगाल पदाधिकारियों एवं अन्तरंग की सदस्यों का निर्वाचन निम्न प्रकार किया गया -

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, के निर्वाचित पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

१- प्रधान —	श्री श्रीराम आर्य (९४३३६७७०९९)
२- उप प्रधान —	श्री सुबीर पोद्दार
	श्री चाँद रतन दम्माणी (९०५१४१४४२२)
	श्री तरूण दास (९४३४३०१५८६)
३- मन्त्री —	श्री दीपक आर्य (८९६१७७४९४०)
४- संयुक्त मन्त्री —	श्री सतीश चन्द्र मण्डल (८४२००९४००२)
५- उप मन्त्री —	श्री वेद प्रकाश शास्त्री (९००७०७६८९९)
	पं० अर्चना शास्त्री (९४३४२३६४३२)
६- कोषाध्यक्ष —	श्री खुशहाल चंद्र आर्य (९८३०१३५७९४)
७- पुस्तकाध्यक्ष —	श्री अपूर्व देव शर्मा (९७३३७९२३४९)
८- उप पुस्तकाध्यक्ष —	डा० प्रताप राय (८९००७०८३९१)
९- आर्य वीर दल-अधिष्ठाता —	श्री मधुसूदन शास्त्री (९८३२४४६४६४)

१०- **अन्तरंग सदस्य —**

श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल (९८८३७४५०९१)	श्री मदन लाल सेठ (९८३६१५४७९०)
श्री मनीराम आर्य (९८३६५३८८४५)	श्री नरेश गुप्ता (९८३१९७७२२५)
श्री सुरेश अग्रवाल (९८३१८४७७८८)	श्री चन्द्र कान्त शर्मा (९४३४९४४१८९)
श्री लोकनाथ चौधरी	श्रीमती पूनम सिंह (९००७९७०९९४)
श्री प्रेम भिक्षु (९४३४३६९६२६)	श्री प्रणवानन्द दत्त
श्री सुकुमार रॉय (९४७५३८५५२९)	श्री ओम प्रकाशराय (९७३३९६४२८३)
श्री विजन शास्त्री (९५९३२५८११५)	श्री प्रताप दास
श्री प्रभाकर भारती राय (९४३४६९२५८७)	श्री नरेन्द्र तिवारी (९९०३६७२९३९)
श्री भूपति राय (९००२७०८१०९)	श्री अखिल खुटिया
श्री देव शंकर दास (९९३३३७००१२)	श्री कंकन खालुआ (९९३३१२३४३९)
श्री अरविन्द सेठ	श्री कल्याण वमर्न
श्री योगेन्द्र दम्माणी	

आर्य समाज कलकता के १३ २ वें वार्षिक उत्सव पर महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद (मेघालय) के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेशजी, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री श्रीराम आर्य, आर्य समाज कलकत्ता के मंत्री श्री दीपक आर्य तथा श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, श्री सुरेश अग्रवाल एवं श्री ध्रुव जायसवाल।

आर्य समाज कलकत्ता के १३ २ वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर
आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ का दृष्य

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित ।